खास लेख-१

तेरापंथ : आचार्य भिक्षु अर मर्यादावां

— प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

जैन परंपरा में तेरापंथ रौ उद्भव आचार्य भीखणजी रा नुंवा आलोक री सृष्टि है। उणां रौ जनम वि.सं. १७८३ में हुयौ। वि.सं. १८०८ में आचार्य रघुनाथजी सूं दीक्षा लेय'र स्थानकवासी मुनि बणिया। वि.सं. १८१७ तेरापंथ रौ प्रवर्तन करियौ अर वि.सं. १८६० में देवलोक हुयग्या। आचार्य भीखणजी आपरा समै में विक्रम री १९वीं शताब्दी रौ जिकौ चित्रण करियौ, वौ हरिभद्रसूरि जी रै समै री विक्रम री ८-९ वीं शताब्दी सूं मिलतौ-जुलतौ है। स्वामी भीखणजी उण बगत रै साधुवां रै शिथिलाचार रौ जिकौ चित्रण करियौ है, जे उणरौ सारांश बौत ई संक्षेप में कैयौ जावै तौ उणरै वास्तै उणां रौ अेक पद्य ई घणौ हुवैला—

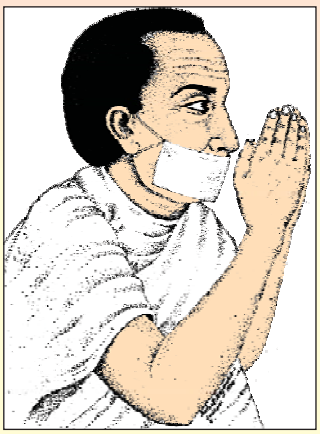

वैराग घट्यौ ने भेष वधियौ, हाथ्यां रौ भार गधां लदियौ।
थक गया बोझ दियौ रालौ, अेहवा भेषधारी पाचमै कालौ॥

वै कैयौ— ''वैराग घटग्यौ है अर वेष बढग्यौ है। संयम री साधना सारू जोगा व्यक्तियां री जगा अजोगा व्यक्तियां नै दीक्षित कर्‌यौ जाय रैयौ है। लागै— हाथियां रौ भार गधां माथै लादियौ जाय रैयौ है। गधा उण भार नै वहन नीं कर सकै। वै उणनै अठी-वठी बिखेर'र खराब कर देवै। इणी तरै अजोगा व्यक्ति ई संयम री साधना नीं कर सकै। वै उणनै खंडित करै अर धरम री अवज्ञा करवावै। इण पांचवैं काल मांय अैड़ा वेषधारी साधु इज रैयग्या है।

दरअसल उण बगत रै साधु वरग मांय आचार-शिथिलता री जिकी दरारां पड़गी ही, वै घणी गैरी अर भरीजणी दोरी ही। स्वामीजी उण बगत वां लोगां मांय जिकी खामियां देखी, उणां रौ वै बाद में आपरै ग्रंथां मांय विस्तार सूं विवेचन करियौ। उणां री समीक्षावां मुजब उण बगत रै साधु-समाज मांय आचार-शिथिलता री मुख्य रूप सूं अै बातां ही—

१. खुद रै निमित्त बणाईज्यै मकानां (स्थानकां) मांय रैवै।
२. पोथी, पात्र अर उपासरा इत्याद मोल लिखावै।
३. लोलुपता रै बस में हुयोड़ा सरस आहार री खोज में भटकता रैवै।
४. मनमाफक पदारथ देवण वाळां री प्रशंसा अर दूजां री निंदा करै।
५. जीमणवार मांय गोचरी जावै।
६. गिरस्थ नै अैड़ी प्रतिग्या दिरवावै के जे थूं दीक्षा लेवै तौ म्हारै सूं इज लीजै, दूजै किणी सूं ई नीं।
७. शिष्यां री संख्या बढावण में इत्ता उतावळा रैवै के टाबरां नै उडाय लेवै अर दूजै किणी गांव मांय जाय'र उणां नै दीक्षित कर लेवै।
८. अच्छै भोजन अर अच्छै वस्त्रां रौ लालच दिखाय'र नासमझ व्यक्तियां नै दीक्षा सारू त्यार करता रैवै।
९. श्रावकां सूं रुपया दिखाय'र शिष्य खरीदै
१०. तत्त्व-ग्यान करायां बिना ई अग्यानी व्यक्तियां नै दीक्षित कर लेवै।
११. शिष्य-शिष्यावां सारू आपस में झगड़ै अर अेक दूजै रै शिष्य नै फोड'र अपणौ बणाय लेवै।
१२. दूजां री निंदा करण में लाग्योड़ा रैवै।
१३. गिरस्थ रै साथै समचार भेजै अर कागद लिखण री प्रेरणा देवै।
१४. मरजादा सूं बेसी वस्त्र राखै।
१५. गिरस्थ रै घर उपाधि छोड जावै। महीनां तांई कोई उणां रौ प्रतिलेखन नीं करै।
१६. आपरै पारिवारिक लोगां री आरथिक स्थिति सुधारण सारू धन री व्यवस्था करवावै।
१७. दोषी लोगां रा दोष दबाय दिया जावै। उणां नै भय रैवै के कठैई वै सगळां री पोल नीं खोल देवै।
१८. समिति, गुप्ति अर महाव्रतां में सावचेती रौ पूरौ अभाव है।
१९. आचारवान साधुवां रै कनै जावण वाळै लोगां नै तरै-तरै रा दबाव डाल'र रोकै। नीं मान्यां उणां रै कडूंबै मांय कळै रौ बीज बोय देवै।
२०. आज रा साधु बिना अंकुस रै हाथी अर बिना लगाम रै घोड़ै री तरै हुय रैया है।

इण भांत स्वामीजी उण बगत रै साधु समाज मांय जिण दोषां रौ उल्लेख करियौ, उणां में कीं अैड़ा हा जिका प्रचुरता सूं व्याप्त हा अर कीं अैड़ा हा, जिका अठी-वठी मिलता हा। विभिन्न व्यक्तियां री आचार शिथिलता में दूजा अनेक कारण हुय सकै, पण अेक कारण अमूमन सगळां रै मूळ में समान हौ। वै लोग कैया करता हा के औ दुष्षम काल है, इण मांय इत्तै करड़ै नियमां रौ पाळण कठण है। आ हीण धारणा शिथिलाचार रौ जिकौ बीज बोयौ, वौ इज फळ'र उण बगत री धारमिक स्थिति नै प्रभावित करण लागियौ।

तेरापंथ रौ उद्भव उण स्थिति में अेकदम जरूरी हौ अर बगत रै मुजब हौ। स्वामीजी जनता रै श्रद्धा पगस नै सबळ बणायौ, धरम रै शुद्ध सरूप माथै पड़ियोड़ै आवरणां नै दूर करिया अर पांचवैं काल रै नांव माथै शिथिलता नै अपणावण वाळै साधु वरग सूं कैयौ के जे थे साधुत्व रै करड़ै नियमां नै नीं पाळ सकौ तौ आपरी उण दुरबळता नै पांचवैं काल रै सिर मती मढौ। साधुता रौ ढोंग रचण सूं तौ घणौ आछौ है के श्रावक व्रत धारण कर लौ। स्वामीजी रै उण क्रांतिकारी अर सबळ आह्वान री फळ परिणति ई 'तेरापंथ' है। आचार्य भिक्षु री रचित 'आचार की चौपई' मांय वां दोषां रै बाबत आगमिक आधार माथै बौत प्रभावी ढंग सूं प्रकास डालियौ गयौ है।

आचार री चौपई

आचार्य भिक्षु री रचित 'आचार की चौपई' मांय वां दोषां रै बाबत आगमिक आधार माथै बौत प्रभावी ढंग सूं प्रकास डालियौ गयौ है। अठै आ चौपई पूरी ज्यूं री त्यूं दिरीज रैयी है :

साधां रै काजै थनक करावै, छ काय रो कर घमसाण।
तिण थानक मांहें रहिवा लागा, त्यां भांगी छै श्री जिन आण॥
बांध्या थानक पकर्‌या ठिकाणा रे, गृहस्थ सूं मोह बंधाण।
सुखसीलिया साताकारी रे, डूबा साधु नो भेष धारी॥

पुस्तक पातर उपासरादिक, लिवरावै ले ले नाम जी।
आछा-टभूंडा कही मोल बतावै, ते करै गृहस्थ नो काम जी॥

रसगृद्धी ते हिलिया गटकै रे, सरस आहार नै कारण भटकै।
भेष लेई आतम नहीं हटकै रे, त्यारै चिंहुं दिस फांदा लटकै॥

ताक ताक जाये घर ताजै रे, साधु भेष लियो नहीं लाजै।
पर घर जाय पड़गो मांडै रे, नहीं दियां भांडां ज्यूं भांडै॥
दाता रा करै गुणग्रामो रे, पाड़ै नहीं दे तिण री मामौ।
करै गृहस्थ आगै बातां रे, नहीं बहिरावै त्यांरी करै तां तां॥

जीमणवार में बहरण जाए, आ साधां ही नहीं रीत जी।
बरज्यौ आचारांग वृहत्कल्प में, उत्तराधेन नसीत जी॥
आलस नहीं आरां में जातां, बले बैठी पांत वसेष जी।
सरस आहार ल्यावै भर पातर, त्यां लज्जा छोड़ी ले भेष जी॥

दिख्या ले तो मो आगै लीजै, और कनै दे पाल जी।
कुगुरु एहवो सूंस करावै, ए चोड़ै उंधी चाल जी॥

बले चेला करै ते चोर तणी परे, ठग पासीगर ज्यूं ताम जी।
बले उजबक ज्यूं तिणनै उचकाए, ले जाय मूंडै और गाम जी॥

आछौ आहार दिखाए तिण नै, कपड़ादिक महीं दिखाय जी।
इत्यादिक लालच लोभ बताए, भोलां नै मूंडै भरमाय जी॥

चेला करचण री चलगत ऊंधी, चाला बोहत चलाय जी।
साथै लियां फिरै गृहस्थ नै, बले रोकड़ दाय दराय जी॥
जो चेलो हूंतो जाणै आपरौ, तौ उणनै रोकड़ दाम दरावै रे।
पांचमौ महाव्रत भांगनै, तो ही साध रौ बिड़द धरावै रे॥

धुर सूं केई नव तत्व नहीं भण्या, ते तो सांग पहरी मुनिराज बण्या।
ज्यूं नाहर री खाल पहरी स्यालौ, एहवा भेषधारी पांचमैं कालौ॥
जीवादिक जाणै नहीं तेहनै, पांचों ही महाव्रत उचरावै रे।
साध र सांग पेहराय नै, भोला लोकां नै पगां लगावै रे॥

बले चेलो करवा कारणे, मांहीमां झगड़ौ मांडै रे।
फाड़ा तोड़ौ करता लाजै नहीं, इम साध रा भेष नै भांडै रे॥

पर-निंद्रा में राता-माता, चित्त में नहीं संतोष जी।
वीर कह्यौ दशमां अंग में, तिण वचन में तेरे दोष जी॥

गृहस्थ नै साथै कहै संदेसौ, तौ भेलौ हुऔ संभोग जी।
तिण नै साधु किम सरधीजै, लागौ जोग नै रोग जी॥
समचार विवरा सुध कहि कहि, सानी कर गृही बुलाय जी।
कागद लिखावै करै आमना, पर हाथे दिए चलाय जी॥

कपड़ा में लोपी मरजादा, लांबा पेना लगाय जी।
इधकौ राखै दोयवड़ ओढ़ै, वलै बोलै मूसावाय जी॥

वस्तर पातर पोथी पानादिक, जाए गृहस्थ रै घरे मेल जी।
पछै करे विहार दे धणी भलावण, तिण प्रवचन दीधा ठेल जी॥
बले बिण पडिलेह्यां रहै सदा नित, गृहस्थ रा घर मांय जी।
ओ साधपणौ रहसी किम त्यांरौ, जोवौ सूतर रौ न्याय जी॥
जो बिण पहिलेह्यां रहै अेक दिन, तिण नै, दंड कह्यौ मासीक जी।
नसीत रै दूज उद्देसै, तिहां जोय करौ तहतीक जी॥

मात पितादिक सगा सनेही, त्यांरा घर में देखै खाल जी।
त्यां नै परिग्रहो साथ दरावै, आ चोड़ै कुगुरु री चाल जी॥
सानी कर साथ दरावै रुपिया, बरत पांचमों भाग जी।
बले पूछ्यां झूठ कपट सूं बोलै, तिण पेहर बिगाड़्यौ सांग जी॥
न्यातीला नै दाम दरावै, त्यां रै मोह न मिटियौ कोय जी।
बले सार संभार करावै त्यांरी, ते निश्चै साध न होय जी॥

कुसीलिया भागल मेला रहै, तिणरौ न काढै निकाल।
कूड़ कपट करता फिरै, बले साधां सिर दे आल॥
परसंसा करै आप आपणी, दोपण देवै ढांक।
भागल भागल मिल गया, किण री न राखै सांक॥
जो अेकण नै अलगौ करै, तौ करै घणा रौ उघाड़।
पलमों दूर कियां डरै, ओ खोटौ नाणो असार॥

पांच सुमत तीन गुपत में, दीसै छिद्र अनेक।
पांच महाव्रत मांहिलो, आखो न दीसै अेक॥

सासू बहू मा बेटियां, बले सगा संबंधियां मांहि।
त्यागै राग नै धेष सिखावता, भेद घलावै ताहि॥
केई आवै सुध साधां कनै, तो मतियां नै कहै आम।
थे बरजी राखो घर रा मिनख नै, जावां मत द्यो ताम॥

बिन अंकुस जिम हाथी चालै, घोड़ौ विगर लगाम जी।
एहवी चाल कुगुरु री जाणौ, कहिवां नै, साधु नाम जी॥

साधपणै थां सूं सझतौ न दीसै, तौ श्रावक नाम धरावौ।
समय सारू वरत चोखा पालौ, दोषण मतीय लगावौ रे॥
आचार थांसूं पलतौ न दीसै, तौ आरा रै माथै मत न्हाखौ।
भगवंत रा केड़ावत बाजौ, झूठ बोलता क्यूं नहीं सांकौ रे॥

तेरापंथ मर्यादा महोच्छब

तेरापंथ धरमसंघ रै त्हैत हर बरस 'मर्यादा महोच्छब' रौ आयोजन हुवै। इण मौकै दूर-दूर सूं आयोड़ा साधु-साध्वियां रै बरस भर रै विवरण रौ लेखौ-जोखौ सामी आवै। उण लेखै -जोखै रै आधार माथै आचार्य संघ री सारणा-वारणा करै। मर्यादा-महोच्छब रै दिन आचार्य अेक-अेक अग्रणी नै बुलाय'र उणनै संबोधित करता थकां आगूंच विहार रौ निरदेस देवै। इणी दिन आचार्य भिक्षु रै लिखियोड़ै मर्यादा-पत्र रौ वाचन हुवै। आचार्य नवी बणायोड़ी गीतिका रै माध्यम सूं मर्यादा-पत्र रौ हार्द समझावै।

तेरापंथ धरमसंघ रै त्हैत हर बरस 'मर्यादा महोच्छब' रौ आयोजन हुवै। औ मर्यादा महोच्छब माघ सुदी ७ रै दिन मनाईजै। दरअसल सरदी री रुत तेरापंथ धरमसंघ री भावना नीति-निरधारण रौ अेक मैतवपूरण बगत हुवै। इण मौकै दूर-दूर सूं आयोड़ा साधु-साध्वियां रै बरस भर रै विवरण रौ लेखौ-जोखौ सामी आवै। उण लेखै -जोखै रै आधार माथै आचार्य संघ री सारणा-वारणा करै। विविध विसयां माथै चिंतन-मनन हुवै अर शिक्षा-गोष्ठियां चालै। मर्यादा-महोच्छब रै दिन आचार्य अेक-अेक अग्रणी नै बुलाय'र उणनै संबोधित करता थकां आगूंच विहार रौ निरदेस देवै। इणी दिन आचार्य भिक्षु रै लिखियोड़ै मर्यादा-पत्र रौ वाचन हुवै। आचार्य नवी बणायोड़ी गीतिका रै माध्यम सूं मर्यादा-पत्र रौ हार्द समझावै।

आचार्य भिक्षु री अलौकिक देन मर्यादा-पत्र

आचार्य भिक्षु जद 'तेरापंथ' रै रूप में नवौ संगठन बणायौ, तद उणनै अनुशासित अर व्यवस्थित बणावण रौ तै करियौ। इण सारू वै लिखतां लिखणी सरू करी। वि.सं. १८३२ री मिगसर वदी २ रै दिन पैलपरथम लिखत लिखी। लिखत लिखण बाबत स्पष्टीकरण करतां वै कैयौ के— ''म्हैं औ उपक्रम शिष्य आद रै ममत्व-परिहार सारू, संयम-विशुद्धि सारू अर सगळा ई अनुशासन अर न्याय-मारग माथै चालै, इण सारू करियौ है।''

उण लिखत नै तत्कालीन साधुवां नै अेकठ कर सुणायौ। सगळा ई साधुवां इण माथै राजी-राजी सहमति प्रदान करता थकां आप-आप रा हस्ताक्षर कर दिया। इण भांत सामूहिक सहमति प्राप्त हुयां आचार्य भिक्षु उण लिखत नै 'संविधान' रौ रूप देय दियौ। उणरै बाद बगत-बगत माथै अनेक लिखतां बणी। छेहली लिखत वि.सं. १८५९ री है। अै लिखतां ई तेरापंथ रौ मौलिक संविधान है। इणरै आधार माथै इज हर बरस 'मर्यादा महोच्छब' मनायौ जावै।

संगठन री दीठ सूं औ संविधान हदभांत ई सुद्रिढ है। औ संविधान आचार्य भिक्षु उण वातावरण मांय दियौ हौ, जद सम-सामयिक संप्रदायां मांय अेक ई संघ में अनेक आचार्य हुय जावता हा अर आचार्य रै अधीन रैय'र ई साधु आप-आप रा अलग-अलग शिष्य बणाया करता हा। सो वैड़ी स्थिति मांय चालतै प्रवाह नै मोड़ देय'र आचार्य भिक्षु जिकौ काम करियौ, वौ इतिहास में अन्यत्र (फेर कठैई) दुरलभ है। छोटै-से समूह मांय सरू करियोड़ौ वौ प्रयोग आज विसाल धरमसंघ मांय उणी तरै चाल रैयौ है। वाकेई संगठन री दीठ सूं इत्तौ सुद्रिढ संविधान आचार्य भिक्षु री अलौकिक देन है।

मर्यादा महोच्छब रै मौकै परिषद मांय वाचन सारू आचार्यश्री तुलसी प्राचीन 'मर्यादा पत्र' रै आधार माथै संगृहीत कर राखियौ है जिकौ इण भांत है—

मर्यादा पत्र

सगळा साधु-साध्वियां पांच महाव्रत, पांच समिति अर तीन गुप्ति री

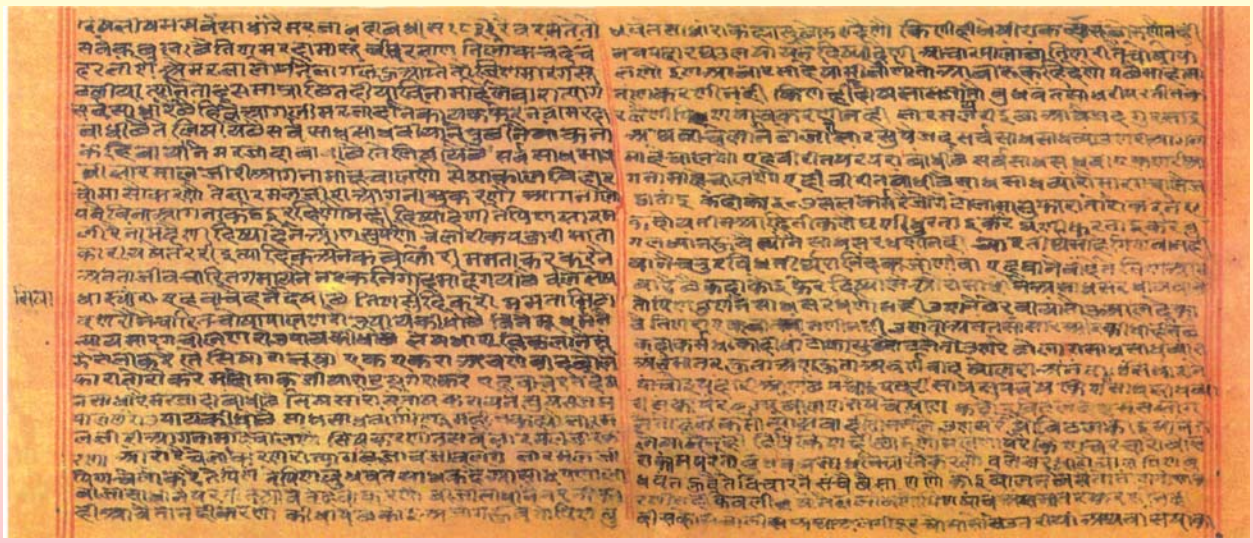

आचार्य भीखणजी रै हाथ रौ वि.सं. १८५९ में लिख्योड़ौ मर्यादा पत्र रौ पैलौ पानौ

अखंड आराधना करै। ईर्या, भाषा, अेषणा में खास तौर सूं सावचेत रैवै। चालतां बगत बातां नीं करै। सावद्य भाषा नीं बोलै। आहार अर पाणी पूरी जांच कर'र लेवै। शुद्ध आहार ई दाता रौ अभिप्राय देख'र हठ-मनवार सूं लेवै। वस्त्र-पात्र इत्याद लेवतां अर राखतां बगत नै 'पूंजणै' अर 'परठणै' में पूरी सावधानी बरतै, प्रतिलेखण अर प्रतिक्रमण करता थकां बात नीं करै।

भिक्षु स्वामी सूत्र सिद्धांत देख'र सम्यक् श्रद्धा अर आचार री प्ररूपणा करी। त्याग धरम, भोग अधरम, व्रत धरम, अव्रत अधरम, आग्या धरम, अनाग्या अधरम, असंयति रै जीवण री वांछा करणौ राग, मरण री वांछा करणौ द्वेष अर संसार समंदर सूं उणरै तिरणै री वांछा करणौ वीतराग देव रौ धरम है।

भिक्षु स्वामी न्याय, संविभाग अर समभाव रै बधापै सारू अर प्रेम, कळै-निवारण अर संघ री सुव्यवस्था सारू अनेक प्रकार री मर्यादावां करी। वै लिखियौ—

१. सगळा साधु-साध्वियां अेक आचार्य री आग्या में रैवै।

२. विहार, चौमासौ आचार्य री आग्या सूं करै।

३. आप-आप रा शिष्य-शिष्यावां नीं बणावै।

४. आचार्य ई योग्य व्यक्ति नै दीक्षित करै। दीक्षित करियां ई कोई अयोग्य निकळै तौ उणनै गण सूं अलग कर देवै।

५. आचार्य आपरै गुरु भाई या शिष्य नै आपरौ उत्तराधिकारी चुणै। उणनै सगळा ई साधु-साध्वियां राजी-राजी स्वीकार करै।

गण री अेकता सारू औ जरूरी है के उणरै साधु-साध्वियां में सिद्धांत या प्ररूपणा रौ कोई मत-भेद नीं हुवै। इणी वास्तै भिक्षु स्वामी कैयौ है—

''कोई सरधा, आचार, कल्प या सूत्र रौ कोई नवौ प्रश्न उठै तौ वौ आचार्य अर बहुश्रुत सूं चरचा करी जावै, पण दूजां सूं चरचा कर'र उणां नै शंकाशील नीं बणायौ जावै। आचार्य अर बहुश्रुत जिकौ उत्तर देवै, वौ आपरै मन मांय जचै तौ मान लेवै, नीं जचै तौ उणनै 'केवली' गम्य कर देवै, पण गण मांय भेद नीं डालै, आपस मांय दळबंदी नीं करै।''

गण री अखंडता सारू औ जरूरी है के कोई साधु-साध्वी आपस में दळबंदी नीं करै। इणी वास्तै भिक्षु स्वामी पैताळीस री लिखत मांय कैयौ है— ''जिकौ गण मांय रैवतौ थकौ साधु-साध्वियां नै फंटाय'र दळबंदी करै, वौ विसवासघाती अर बहुलकर्मी है।'' स्वामीजी जगै-जगै दळबंदी माथै प्रहार करियौ है। पचास री लिखत मांय वै लिखियौ है— ''कोई साधु-साध्वी गण मांय भेद नीं डालै अर दळबंदी नीं करै।'' स्वामीजी चंद्रभाणजी अर तिलोकचंदजी नै इण वास्तै गण सूं अलग करिया के वै जिका साधु-आचार्य सूं सम्मुख हा, उणां नै विमुख करता हा। छानै-छानै गण रै साधु-साध्वियां नै फोड़-फोड़'र खुद रा बणाय रैया हा, दळबंदी कर रैया हा। आपां रौ औ चावौ सूत्र है— ''जिल्लो ते संयम ने टिल्लो।'' गण मांय भेद डालण वाळै सारू भगवान दसवैं पिरास्चित रौ विधान करियौ है। अर भिक्षु स्वामी कैयौ— ''जीं गण रै साधु-साध्वियां मांय साधुपण सरधै, अपणै आप में साधुपण सरधै, वौ गण मांय रैवै। छळ-कपट रै साथै गण मांय नीं रैवै।'' पचास री लिखत मांय वै कैयौ— ''जिण रौ मन साख देवै, भलीभांत साधुपण पळतौ जाणै, गण मांय अर आप मांय साधुपण मानै तौ गण मांय रैवै, पण वंचना रै साथै गण मांय रैवण रौ त्याग है।''

गण मांय जिका साधु-साध्वियां हुवै, उणां मांय आपस में सौहार्द रैवै। कोई आपस में कळौ नीं करै अर उपशांत कळै री उदीरणा नीं करै। इणी वास्तै भिक्षु स्वामी कैयौ— ''गण रै किणी साधु-साध्वी रै प्रति अनास्था उपजै, शंका उपजै वैड़ी बात करण रौ त्याग है। किणी मांय दोस देखै तौ तत्काल उणनै जताय देवै अर आचार्य नै जताय देवै, पण उणरौ प्रचार नीं करै। दोसां नै चुण-चुण'र अेकठ नीं करै। जिकौ जाण पड़ै उणनै अवसर देख'र तुरंत जताय देवै। वौ पिरास्चित रौ भागी है, जिकौ बौत बगत बाद दोष बतावै।'''विनीत-अविनीत की चौपाई' मांय वै कैयौ है—

दोष देखै किण ही साध में, तौ कह देणौ तिण नै अेकंत।
जो मानै नहीं तौ कहणौ गुरु कनै, ते श्रावक छै बुद्धिवंत॥
सुविनीत श्रावक अेहवा॥ १॥
प्राश्चित दराय नै सुद्ध करै, पिण न कहै अवरां पास।
ते श्रावक गिरवा गंभीर छै, वीर बखाण्या तास॥
दोष रा धणी नै तौ कहै नहीं, उणरा गुरु नै पिण न कहै जाय।
और लोकां आगै बकतौ फिरै, तिणरी प्रतीत किण विध आय॥

आचार्य भीखणजी रै हाथ रौ वि.सं. १८५९ में लिख्योड़ौ मर्यादा पत्र रौ दूजौ पानौ

अविनीत श्रावक अेहवा॥ ३॥

अर किणी साधु-साध्वी नै जाति इत्याद नै लेय'र ओछी जबान नीं कैवै। आपस में मन-मुटाव हुवै, वैड़ौ सबद नीं बोलै। अेक दूजै में वैम पैदा नीं करै।

अर गण अर गणी री गुण रूप बारता करै। कोई गण अर गणी री उतरती बात करै, उणनै टोक देवै अर वौ जिकौ कैवै, उणनै आचार्य नै जताय देवै। कोई उतरती बात करै अर कोई उणनै सुणै, वै दोनूं अविनीत है, विनीत वौ हुवै जिकौ आग्या नै सै सूं ऊपर मानै—

जिन शासन में आज्ञा बडी, आ तौ बांधी रे भगवंता पाळ।
सहु सज्जण असज्जन भेळा रहै, छांदौ रुंधै रे प्रभु वचन संभाळ॥
बुद्धिवंता अेकल संगत न कीजियै
छांदौ रूंध्या पिण संजम नीपजै, तौ कुण चालै रे पर ही आज्ञा मांय।
सहु आप मतै हुवै अेकला, खिण भेळा रे खिण बिखर जाय॥

भगवान कैयौ है— ''चइज्ज देहं न हु धम्म सासणं।'' मुनि सरीर नै छोड देवै, पण धरम-शासन नै नीं छोडै। जयाचार्यजी उणनै पुष्ट करता थकां लिखियौ है—

नंदन वन भिक्षु गण में बसौ री, हे जी प्राण जाये तौ पग म रिवसौ री।
गण मांहे ज्ञान-ध्यान शोभै री, हे जी दीपक मंदिर मांहे जिसौ री।
टाळोकर नो भणवौ न शोभै री, हे जी नाक बिना औ तौ मुखड़ौ जिसौ री।
भाग्य बळे भिक्षु गणपायौ री, हे जी रतन चिंतामणी पिण न इसौ री।
गणपति कोप्यां ही गाढा रहौ री, हे जी समचित शासण मांहे लेसौ री।

पण कोई साधु-साध्वी क्रोध आद रै बस आग्या अर अनुशासन रौ पाळन नीं कर सकियां या दूजै किणी कारण सूं अलग हुय जावै या किणी नै अलग करियौ जावै तौ किणी साधु-साध्वी रौ मन भंग कर'र आपरै साथै ले जावण रौ त्याग है। कोई जावणौ चावै तौ ई उणनै साथै लिजावण रौ त्याग है। गण रै साधु-साध्वियां री उतरती बात करण रौ त्याग है। अंशमात्र ई अवर्णवाद बोलण रौ त्याग है अर छानै-छानै लोगां नै शंकाशील बणाय गण रै प्रति अनास्था उपजावण रौ त्याग है। अर वस्त्र, पात्र, पुस्तक-पन्ना इत्याद गण रा हुवै, इणी वास्तै उणां नै आपरै साथै लिजावण रौ त्याग है।

गण सूं निकाळियोड़ै या बारलै व्यक्तियां रै प्रति आपां रौ कांई द्रिस्टीकोण हुवणौ चाइजै, उणनै स्पष्ट करता थकां भिक्षु स्वामी लिखियौ है— ''गण सूं निकाळियोड़ै या बारलै व्यक्ति नै साधु नीं सरधा जावै, च्यार तीरथ में नीं गिणियौ जावै, साधु मान वंदना नीं करी जावै। श्रावक-श्राविकावां ई आं मर्यादावां रै पाळन में सजग रैवै।''

भिक्षु स्वामी गण री सुव्यवस्था सारू, मर्यादा री अर उणां नै दीरघ द्रिस्टी सूं देखियौ के भविस मांय वरतमान मर्यादावां में बदळाव या संशोधन जरूरी हुय सकै, इणी वास्तै वै लिखियौ के आगै जद कदैई ई आचार्य जरूरी समझै तौ कोई नवी मर्यादा करै। पुराणी मर्यादावां में बदळाव या संशोधन हुवै या नवी मर्यादावां रौ निरमाण हुवै, उणनै सब सगळा साधु-साध्वियां राजी-राजी स्वीकार करै।

सफळ साधु वौ इज हुवै, जिकौ साधना में लीन रैवै। निरलेप रैवण सारू औ जरूरी है के साधु-साध्वियां गिरस्थां रै संग परिचै में नीं फंसै। जयाचार्यजी लिखियौ है—

थे तौ चतुर सीखौ सुध चरचा रे, थे तौ परर देवौ परचा।
अै तौ परचा आछा नांही, तूं तौ समझ राख हिया मांहि॥
परचौ राखै ते नर भोळा, तिण रौ जीव करै डाळा डोळा।
परचा स्यूं ओळभौ पावै, तिणरी क्यां ही शोभा नहीं थावै॥
परचा वाळौ जो क्षेत्र भोळावै, तौ मन रळियायत थावै।
परचा वाळै क्षेत्र नहीं मेलै, दो दाव कपट बहु खेलै॥
पछै आमण-दुमण थाकौ जावै, पिण मन में तौ बहु दुख पावै।
रात-दिवस जाये हिंजरतां, परचावाळां रौ ध्यानज धरतां॥
अेहवा परचा रा फळ जाणी, तिण नै परहरे उत्तम प्राणी।
जिणरै परचा रौ पड़ियौ सभावौ, छूटण रौ कठण उपायौ॥
जबर समझ हुवै हिया मांह्यौ, तौ उ तुरंत देवै छिटकायौ।
तिण रै प्रीत औरां स्यूं पूरी, गणपति स्यूं प्रीत अधूरी॥
परचावाळा साहमो नहीं जोवै, बलै नयण बयण नहीं मोवै।
परचौ छूटण रौ अेक उपायौ, जय गणपति अेम जणायौ॥
परचा वाळा री भावना भावै, जाणै दरशण करवां कद आवै।
आयां देख हियै अति हरषै, जाणै जंवरी नग नै परखै।
उगणीसै वर्ष उगणीसे, मृगसर विद सातम दिवसे।
प्रथम मरजाद दिन सुखदायौ, परचा नै जयजश ओलखायौ॥

नींद, हास्य, विकथा — अै साधना रा विघन है। इण वास्तै नींद नै बहुमान नीं देवै, हास्य अर विकथा रौ वरजन करै ने ध्यान अर स्वाध्याय रै जरियै आत्मा नै भावित करै।

निद्दं च न बहुमन्नेज्जा, सप्पहासं विवज्जए।
मिहो कहाहिं न रमे सज्झायम्मि रओ सया॥
सज्झाय-सज्झाणरयस्स ताइणौ, अपावभावस्स तवे रयस्स।
विसुज्झई जंसि मलं पुरकडं, समीरियं, रुप्पमलं व जोइणौ॥

महाव्रतां, समिति-गुप्तियां अर गण री छोटी-बडी सगळी मर्यादावां रौ सम्यक् पाळन करण वाळा मुनि आचार्य री आराधना करै, श्रमणां री आराधना करै अर सगळै लोगां री द्रिस्टी मांय वौ पूज्य हुवै। अर जिकौ उणरौ सम्यक् पाळन नीं करै, वौ नीं आचार्य री आराधना करै अर नीं लोकां री द्रिस्टी में पूज्य हुवै।

आयरिअे आराहेइ, समणै यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥
आयरिअे नाराहेइ, समणै आवि तारिसो।
गिहत्था वि णं गरिहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इणी वास्तै विनीत साधु-साध्वियां आग्या, मर्यादा, आचार्य, गण अर धरम री सम्यक् आराधना करै अर धरम-शासन रै गौरव में बधापौ करै।

आंण सम्मं आराहइस्सामि। मेरं सम्मं पालस्सामि॥
आयरियं सम्मं आराहइसामि। गणं सम्मं अणुगमिस्सामि॥
धम्मं न कयावि जहिस्सामि। आणं सरणं गच्छामि॥
मेरं सरणं गच्छामि। आयरियं सरणं गच्छामि॥
गणं सरणं गच्छामि। धम्मं सरणं गच्छामि॥

आचार्य भिक्षु रै करियै इण प्रयोग रै ठीक अेक सदी बाद जयाचार्यजी इणनै औरूं विस्तार दियौ। संविधान रै मुजब व्यक्तिगत शिष्य बणावण री प्रथा तौ अपणै आप खतम हुयगी ही, पण व्यक्तिगत पुस्तकां री परंपरा

चालू ही। सो किणी रै कनै जरूरत सूं ज्यादा पुस्तकां ही, तौ किणी रै कनै बिलकुल ई नीं। जयाचार्यजी रै मन मांय आ बात अखरती ही, सो अेक दिन वै अग्रणी साधु-साध्वियां रै सामी अेक प्रश्न राखियौ— ''आप लोगां रै साथै रैवण वाळा साधु-साध्वियां किणरी निश्रा में है?''

सगळा ई अेक स्वर में उत्तर दियौ— ''आचार्य श्री री निश्रा में।''

तद जयाचार्यजी दूजौ प्रश्न करियौ— ''पुस्तकां किणरी निश्रा में है?''

सगळा ई उत्तर दियौ— ''वै तौ जिणरै कनै है, उणरी निश्रा में है।''

जयाचार्यजी कैयौ— ''तद आप खुद री निश्रा री पुस्तकां दूजै साधु-साध्वियां सूं कीकर उठवावौ? आज सूं जिकौ व्यक्तिगत पुस्तकां राखैला, वौ उणां रौ भार खुद उठावैला। आपरै साथै वाळै साधु-साध्वियां सूं नीं।''

जयाचार्यजी री इण अचाणचकी घोषणा सूं सगळा ई अग्रणी स्तब्ध हुयग्या। कीं विनय रै साथै पूछियौ— ''गुरुदेव! अेकला म्हे इत्ती सारी पुस्तक कीकर उठावांला? आप आग्या दिरावौ, वैड़ौ करां!''

तद जयाचार्यजी कैयौ— ''तौ पछै संघ नै समरपित क्यूं नीं कर देवौ? संघ अपणै आप उणां री व्यवस्था करैला।''

उणी दिन सूं अनेक अग्रणी साधुवां आप-आप री पुस्तकां लाय'र जयाचार्यजी नै अर साध्वियां महासती सरदारजी नै सूंप दीवी। जयाचार्यजी वां सगळी पुस्तकां नै ग्रहण कर'र अपेक्षा अनुसार समरपकां नै देय'र बाकी पुस्तकां दूजै सिंघाड़ां मांय वितरित कर दीवी अर अेक मर्यादा बणाय दीवी के अबै सगळी ई पुस्तकां संघ री हुवैला। सो चौमासा रै बाद जद आचार्य रा दरसण करौ, तद उणां नै सूंपणी हुवैला। इणरौ फळ औ हुयौ के सामूहिक रूप सूं काम में आवण वाळी सगळी ई वस्तुवां माथै व्यक्तिगत स्वामित्व नीं रैयौ।

दूजौ कदम हौ— श्रम संविभाग रै संबंध में सरू सूं आ परंपरा चाली आय रैयी ही के कीं सामूहिक काम दीक्षा-पर्याय में छोटा साधुवां नै इज करणा हुवता हा, भलां ई वै बूढा ई क्यूं नीं हुवौ। जयाचार्यजी उणनै बदळ'र सगळै ई सदस्यां सारू श्रम करणौ अनिवार्य कर दियौ।

इण भांत स्थान, आहार अर धरम-उपकरण इत्याद किणी चीज माथै किणी रौ व्यक्तिगत स्वामित्व नीं रैयौ, अर अेक धरम संप्रदाय मांय सैज ई अेक अैड़ी व्यवस्था बणगी, जिणनै समाजवाद रै बराबर राखियौ जाय सकै।

समाजवादी व्यवस्था रौ पैलौ सूत्र है के जीवण रै साधनां माथै किणी रौ व्यक्तिगत स्वामित्व नीं हुवणौ चाइजै। वै समष्टिक है, उणी रा रैवौ, उणरै अंग रूप में समान रूप सूं जरूरत मुजब सगळां रै काम आवौ। कोई किणी सूं संपन्न या विपन्न नीं रैवै। तेरापंथ साधु संघ मांय जित्ता ई साधु-साध्वियां है, उणां में किणी रौ ई जरूरी धरम-उपकरण, आहार अर आवास माथै कोई स्वामित्व नीं है। वै अणगार है, उणां रौ खुद रौ कोई आवास नीं है। जठै ई जावै, किणी रौ आवास मांग'र उणरी अनुमति सूं आपरै तै बगत तांई रैवै। उठै, सूवै। जरूरत मुजब याचित करै। उणरौ ई संविभाग हुवै। किणी रै कनै प्रमाण सूं बेसी वस्त्र नीं हुय सकै अर दूजै सूं कम ई नीं। आहार ई गिरस्थां रै अठै सूं माधुकरी वृत्ति सूं थोड़ौ-थोड़ौ अनेक घरां सूं याचित करै, ताकै किणी माथै भार नीं पड़ै। प्राप्त आहार रौ संविभाग हुवै।

भगवान महावीर कैयौ— ''असंविभागी न हु तस्स मोक्खो।'' — असंविभाग नै मोक्ष नीं मिलै। संविभाग रै इण नियम रौ तेरापंथ मांय द्रिढता सूं पाळन हुवै।

तेरापंथ रा साधु-साध्वी देश भर मांय विहरण अर चौमासौ करै। हर दळ रै साथै वस्त्र, पात्र, पुस्तक इत्याद धरम-उपकरण हुवै, जिका उणरी जीवणचर्या सारू जरूरी हुवै। चौमासै अर विहार रै बाद आचार्य रै उपपात में आयां दळ रौ अग्रणी साथै रै साधुवां नै उणां रै साथै रा सगळै धरम-उपकरणां नै अर खुद नै ई आचार्य रै चरणां में समरपित कर'र कैवै— ''गुरुदेव! अै आपरा साधु-साध्वियां, अै धरम-उपकरण, पुस्तकां, पात्र, वस्त्र इत्याद अर म्हैं खुद नै आपरै चरणां मांय उपस्थित करूं। अबै आप जैड़ी आग्या देवौला, वैड़ौ ई करूंला।'' औ समरपण किणी व्यक्ति या व्यक्तियां रौ दूजै व्यक्ति रै आगै नीं, व्यष्टि नै है।

दळ रै अग्रणी रौ ई आपरै साथै रै संतां माथै कोई स्वामित्व नीं। सगळा साधु-साध्वियां अेक आचार्य रा शिष्य है, आपस में गुरुभाई है। कोई किणी नै आपरौ शिष्य नीं बणाय सकै। आचार्य नै ई दीक्षा प्रदान करण रौ सरब अधिकार है। आचार्य री आग्या सूं जरूरत मुजब कोई ई साधु-साध्वी देय सकै। पण शिष्य रै रूप में नीं, आपरै ई अेक छोटै गुरुभाई रै रूप में। धरमसंघ रै सदस्य रूप में सगळां नै समान अधिकार है। सत्ता रौ स्रोत आचार्य है, उणां री आग्या प्रधान है। उणां रै नियुक्त करियोड़ौ अग्रणी उणी सत्ता रौ संवाहक हुवै। संघ मांय किणी रौ किणी माथै अधिकार नीं है। सगळा आखिरकार अेक ई आचार्य नै, धरमसंघ नै समरपित है। आपरी व्यक्तिगत सत्ता रौ विसरजन समाजवादी व्यवस्था री अनिवार्य सरत है, जिण रौ सिरै रूप तेरापंथ धरमसंघ मांय मिलै।

विषमता रौ अेक स्रोत पद हुवै। तेरापंथ में काम रौ सम्यक् विभाजन है, उत्तरदायित्व वितरण है, पण पदां री व्यवस्था नीं है। आचार्य खुद ई आपरै उत्तराधिकारी नै मनोनीत करै, जिकौ उणरै बाद आपरौ पद ग्रहण करै। पद सारू कोई उम्मीदवार नीं हुय सकै। धरमसंघ री व्यवस्था इत्ती समता वाळी है के विशेष अधिकार अर पद रौ अठै अस्तित्व ई नीं है। सेवा सारू अठै भरपूर स्थान है, सत्ता सारू नांवमात्र ई नीं। सेवा सगळां सारू अनिवार्य दायित्व सगळां माथै है, उण मांय किणी नै किणी ई आधार माथै मुक्ति नीं है। सेवा अर परिचर्या रौ दायित्व साधु-साध्वियां राजी-राजी ग्रहण करै। बूढै, अक्षम अर बीमार साधु-साध्वियां सारू लाभ अर सेवा रौ केन्द्र है, जठै उणां री परिचर्या नियमित रूप सूं हुवै। किणी ई सामाजिक व्यवस्था में बीमार अर अक्षम लोगां सारू इत्ती सुचारू अर व्यापक व्यवस्था मिलणी दुरलभ ई है।

आं सगळी व्यवस्थावां नै जमावण में जयाचार्यजी री क्रांतदरसी मेधा रौ महान योगदान है। जयाचार्यजी आचार्य भिक्षु रै बणायोड़ी मर्यादावां नै वैवारिक रूप देवण सारू बगत-बगत माथै अनेक आयामां नै मूरत रूप दियौ है।

प्रो. डॉ. सोहन राज तातेड़
(पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय)
जी-८, मुल्तान कुंज, भगत री कोठी अेक्सटेंशन
जोधपुर-३४२००५